ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 178-180

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

आत्मनिर्भर भारत में हस्तशिल्प कलाओं का योगदान (एक अध्ययन)

1. निशि
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर चित्रकाला विभाग, एन0 ए0 एस0 कालेज, मेरठ & समन्वयक- ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विष्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-20.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-29.06.2022 E-mail: alkatiwari151@gmail.com

सारांशः– *भारत देश में हस्तकला का एक गौरववमयी इतिहास है। हस्तशिल्प भारतीय संस्कृति व सभ्यता का अभिन्न अंग है, क्योंकि हस्तकलाओं की मूलता स्थानीय निवासियों के मानदण्डों, परम्पराओं व मान्यताओं से जुड़ी होती है। भारत के आर्यावर्त से इण्डिया बनने तक के सफर में हस्तशिल्प का अपना अलग स्थान रहा है। कोई भी संस्कृति बिना कला के अधूरी होती है। हमारे देश में विभिन्न रूपों में कला की विद्यमानता वही और भारत देश हस्तशिल्प कला का सर्वोत्कृष्ट, प्राचीन केन्द्र रहा है। हस्त शिल्प या हस्तकला वह कलात्मक कार्य है, जिसे हाथों व सरल औजारों से बनाया जाता है। यह कला सजावटी होने के साथ रोजगार का मुख्य साधन है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के बाद हस्तशिल्प को आजीविका का मुख्य साधन माना जाता है, जो देश के बड़े जनसमुदाय को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। कलाकारों का उत्पादन व निर्माण उनका पेशा बन जाता है, वह पेशा ही स्वराज्य की कल्पना को साकार करने का माध्यम है। यहाँ की भूमि में अनेक कुशल कारीगर पल्लवित होते है तथा अपनी रचनात्मकता व कुशलता से अपना कर्मभूमि को विश्वपटल पर प्रकाशित करने में अपना योगदान देते है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्धेश्य यह है कि हस्तकलायें कैसे आत्मनिर्भर भारत निर्माण में अपना योगदान दे रही है।*

कुंजीभूत शब्द– गौरववमयी इतिहास, हस्तशिल्प, सभ्यता, मानदण्डों, परम्पराओं, मान्यताओं, कला की विद्यमानता।

भारत देश अनेक कलाओं का उद्गम स्थल रहा है। प्राचीन काल से ही यहाँ हस्तकला कृतियों का निर्माण होता रहा है। अनेक क्षेत्रों में रहने वाला कोई कोई भी जनज ब हस्तशिल्प का निर्माण करता है, तो वह भारत की आत्मनिर्भर में सक्षम योगदान देता है। यहा की हस्तकला की मूल विशेषता है कि यहाँ सामान्य वस्तुयें भी कोमल व कलात्मक रूप से गढी जाती है।

यही कलात्मकता कलाकारों को रोजगार के नवीन अवसर प्रदान करती है। यहा हर क्षेत्र की शिल्पकला अपने अन्दर एक अलग विशेषता समाहित किये हुये है।

उदाहरणार्थ– कश्मीर में कढाई वाली शॉल, गलीचे, नामदार सिल्क व अखरोट की लकड़ी के बने फर्नीचर विख्यात है। राजस्थान में वस्त्रों का बन्धनी काम जरी, आभूषण, चमकते नीले बर्तन मीनाकारी व पॉटरी (ब्लू व ब्लैक पॉटरी) आदि विश्व प्रसिद्ध हैं। आन्ध्रप्रदेश में बीदरी का कार्य (धातुओं पर चॉदी की नक्काशी) बहुत ही प्रसिद्ध है। यहाँ पर खिलौने साडियॉ, हैण्डलूम कार्य भी कारीगरों की कुशलता का परिचायक है। तमिलनाडु की तांबें की मूर्तियां व कांजीवरम की साडियॉ विख्यात है तो मैसूर रेशम और, चन्दन की लकडी के उपस्कर हेतु प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश की चन्देरी व कोसा सिल्क, लखनऊ की चिकनकारी बनारस की बोकेड जरी वाली, सिल्क उत्कृष्ट कला की नमूना है।

असम में बेंत के उपस्कर, बाकुंरा का टेराकोटा व बंगाल व कपडा भारत के विशिष्ट व पारम्परिक सजावटी दस्तकारी के उदाहरण हैं।

भारत के कुछ प्रमुख शिल्प– बॉस के हस्तशिल्प–बॉस का उत्पादन अधिक होने के कारण भारत में बने हस्तशिल्प बहुत बेंहतर होते है। बॉस से टोकरियॉ, गुडिया, खिलौने, चटाई, बॉल हेसिंग्स छातों के हैडिल, सोफे, कुर्सिया बॉक्स आदि बनते है। इनको उत्पादन पश्चिम बंगाल, असम व त्रिपुरा में होता है।

बेंत निर्मित हस्तशिल्प– बेंत का सामान भारत में हस्तशिल्प का पुराना रूप है। जिसमें उपयोगी वस्तुयें जैसे ट्रे, टोकरियॉ, फर्नीचर आदि बनता है।

बेल मेटल हस्तशिल्प–पीतल के कडे रूप जिसका उपयोग घण्टी बनाने में किया जाता है उसे बेल मेटल कहते है। इस कडी मिश्र धातु का उपयोग सिंदूर के बक्से, कटोरे, मोमबती, स्टैण्ड व पेंडेट आदि बनाने के काम आता है। यह ज्यादातर मध्यप्रदेश, बिहार, असम, मणिपुर में प्रचलित है। मध्यप्रदेश में हस्तशिल्प के इस रूप की आदिवासी शिल्प के रूप में जाना जाता है।

हड्डी व सींग निर्मित हस्तशिल्प– ओडिशा के राज्य में जन्मे हड्डी और सींग के हस्तशिल्प पक्षी और जानवरों के रूप बनने के काम आता है, जो कि बहुत असली व जीवन्त लगते हैं। इसके अलावा पैन स्टैण्ड, गहने, डिब्बे, मूर्तियॉ (बुद्धा) कप आदि ओडिशा, कर्नाटक, केरल और उत्तर प्रदेश में बनाये जाते हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पीतल हस्तशिल्प– पीतल के सामानों के स्थायित्व के कारण पीतल के बर्तन मशहूर है। उ0प्र0 का मुरादाबाद पीतल के बर्तनों के उत्पादन के कारण पीतल नगरी कहलाता है। पीतल से बने विभिन्न देवताओं की मूर्तियां, फूलदान, हुक्के, बक्से, ताले और अन्य बहुत वस्तुयें भारत में इस्तेमाल की जाती है। पीतल के बर्तन राजस्थान में अधिक बनाये जाते हैं।

मिट्टी के हस्तशिल्प– सिन्धु घाटी की सभ्यता में उत्पत्ति होने के बाद से मिट्टी के बर्तन भारत में हस्तशिल्प का सबसे पुरातन स्वरूप है। इस काम में संलग्न लोगों को कुम्हार कहा जाता है, मिट्टी का विश्वप्रसिद्ध रूप टेराकोटा है, इसके अलावा बर्तनों के विभिन्न स्वरूप है। जैसे लाल, ग्रे व काले बर्तन के रूप हैं।

धोकरा हस्तशिल्प– धोकरा हस्तशिल्प का सबसे प्राचीन स्वरूप है व साथ ही सबसे पारम्परिक सादगी से भरपूर इस हस्तशिल्प की उत्पत्ति मध्य–प्रदेश में हुई। पश्चिम बंगाल, बिहार और ओडिशा जैसे राज्य भी हस्तशिल्प निर्माणकर्ता रहे है। धोकरा लोक चरित्र का प्रदर्शन करते हुये, अपने अनूठें सामानों के लिए भी जाना जाता है।

जूट निर्मित हस्तशिल्प– सम्पूर्ण विश्व में जूट हस्तशिल्पों ने अपनी खास जगह बनायी है। जूट शिल्प के बैग ऑफिस स्टेशनरी, चूड़ियाँ, वॉलहैगिंग्स व कई सामान शामिल है। पश्चिम बंगाल, असम व बिहार सबसे बड़े जूट उत्पादक है। भारत में जूट हस्तशिल्प के बहुत बडे बाजार भी है।

कागज निर्मित– कागज के पतंग, फूल, लैम्प, सजावटी झालर, कठपुतली, हाथ के पंखे आदि बनाये जाते हैं। मुगल काल से कागज हस्तशिल्प का निर्माण चलता आ रहा है, प्राचीन समय में महिलायें कागज में अनेक मिश्रण मिलाकर लुगदी तैयार कर बर्तनों (टोकरियों, फूलदान) आदि का निर्माण करती थीं। यह शिल्प उद्योग आमतौर पर दिल्ली, राजगीर, पटना, गया, अवध, अहमदाबाद व इस्लामाबाद में विख्यात है।

रॉक हस्तशिल्प– रॉक कला का सबसे प्राचीन रूप रॉक नक्काशी है, जो कि राजस्थान, जयपुर, ऑडिशा व नागपुर में देखा जा सकता है। राजस्थान, मध्यप्रदेश सगंमरमर की नक्काशी हेतु प्रसिद्ध है। मध्यप्रदेश की खासियत हरे रंग के पत्थरों की कला है, जबकि पत्थरकट्टी गया का अनूठा रॉक शिल्प। उड़ीसा के प्राचीन मंदिर रॉककट का अद्भुत मिशाल है।

शैल निर्मित हस्तशिल्प– अति प्राचीन काल से ही भारत में शैल हस्तशिल्प की मांग रही है। शैल हस्तशिल्प तीन तरह की शैल शंख शैल, कछुआ शैल व तरह–तरह की समुद्री शैल से बनाये जाते हैं। इसमें कई तरह के सामान,चूड़िया सजावटी बर्तन, फूलदार, गहने, दर्पण फ्रेम, टेबल मेट आदि बनाये जाते है। तरह–तरह के रत्नों का निर्माण भी शैलों द्वारा किया जाता है। ज्यादातर शैल हस्तशिल्प समुद्री किनारों पर मौजूद जगहों (जैसे मन्नार की खाडी, गोवा, ओडिशा आदि) पाये जाते हैं।

ताराकाशी– चांदी का महीन काम या ताराकशी सोने या चांदी के तारों का से किया गया हस्तशिल्प का रचनात्मक कार्य है। चांदी का महीन काम तीन तरह का होता है मीनाकारी, खुल्लाजाल और फूल–पत्तियाँ। इनमें पानदान चाय की ट्रे, बॉक्स गहने बनाये जाते हैं। ओडिशा के कटक के अलावा तेलंगाना में भी इस हस्तशिल्प का कार्य मशहूर है।

कढ़ाई हस्तशिल्प– धागे की कढाई व बुनाई हस्तशिल्प का पारम्पारिक रूप है। इसमें राजस्थान का बन्धनी, लखनऊ की चिकनकारी, फुलकारी आदि शामिल है। गुजरात, मध्यप्रदेश व राजस्थान, बिहार व कर्नाटक अपनी कढ़ाई के काम हेतु प्रसिद्ध है।

लकडी के हस्तशिल्प– पत्थर की मूर्तियों के अस्तित्व में आने के बहुत पहले से ही लकडी हस्तशिल्प भारत में प्रचलित था। कारीगरों की कुशलता द्वारा लकडी के टुकडों को विभिन्न आकार देकर विविध सामान बनाये जाते थे। लकडी के द्वारा औजारों के हैंडिल खिलौने, बर्तन, सजावटी सामान, वर्तमान में गहने, घरेलू सामान, बक्से सन्दूक अलमारियॉ, बडे, सोफे, कुर्सियॉ, मेज, छपाई हेतु ठप्पे आदि अनगिनत सामान बनाये जाते थे।

भारत में अन्य तरह के हस्तशिल्प– उपर्युक्त विवेचन के अलावा हस्तशिल्प के अन्य रूप भी भारत में प्रचलित है। तामचीनी हस्तशिल्प, ग्लास हस्तशिल्प लाख हस्तशिल्प, जरी हस्तशिल्प, चमड़ा हस्तशिल्प, संगमरमर हस्तशिल्प, धातु हस्तशिल्प आदि।

हस्तकला के प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार द्वारा चलायी गयी कुछ योजनायें–

1. बाबा साहेब अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना,
2. विपणन सहायता व सेवा योजना,
3. डिजाइन प्रोद्योगिकी उन्नयन योजना,
4. निर्यात प्रोत्साहन योजना,
5. विशेष हस्तशिल्प प्रशिक्षण योजनायें,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

6. समर्थ योजना,
7. एक जनपद एक उत्पाद,
8. हस्तशिल्प कौशल विकास प्रशिक्षण योजना
9. मुख्यमंत्री हस्तशिल्प पेन्शन योजना।

हस्तशिल्प की कुछ सरकारी दुकानें–

1. दिल्ली में दिल्ली हॉट,
2. बंगलौर में कला माध्यम,
3. भुवनेश्वर में एकाग्रा हाट,
4. जयपुर में राजस्थली,
5. दिल्ली व हैदराबाद में एम ई एस एच।

हस्त कलाओं के संरक्षण हेतु संस्कृति मंत्रालय ने भी विभिन्न कार्यक्रमों व योजनाओं को कार्यान्वित किया है, जिसका उद्धेश्य हस्तकालाओं के क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों, समूहों व सांस्कृतिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत हस्त कला के उत्पादन का प्राचीन केन्द्र रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक भारत के कालक्रम में शिल्पकार को बहुआयामी भूमिका का निर्वाह करने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। शिल्पकार शिल्पवस्तुओं के निर्माता और विक्रेता के अलावा समाज में डिजाइनर, सर्जक, अन्वेषक और समस्याएं हल करने वाले व्यक्ति के रूप में भी कई भूमिकाएं निभाता है। इसका सृजन एक विशेष कार्य के लिए ग्राहक की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए किया जाता है। आधुनिक परिवेश में भी इस काल की मॉग बहुत बढ रही है। इसीलिए में कलायें स्थानीय स्तर से उठकर वैश्विक स्तर का रोजगार बनती जा रही है। 'मेड इन इण्डिया' आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। बहुत बडी जन भागीदारी से यह कला लोकप्रिय होती जा रही है। इन कलाओं को अधिक विकसित करने हेतु सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। कलाकारों को भी अपनी कलाकृतियों में नवीनता का समावेश करना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपूर, राधिका–"भारत में कलाकृतियाँ और हस्तशिल्प का महत्व"।
2. https www poesindia. in.
3. https://study pillarin hasta kala in com.
4. https://ni mowpipedis. org wik हस्तकला।
5. https:// bharat discovery .org, india.
6. हस्तशिल्प –भारत कोश हिन्दी महासागर।
7. hindi mapsofindia.com.
8. http:// dakshinko saltoday. cons india.
9. http:// www meerut nic in/ rightrde {links]pdf}
10. syllabs/Indian- Craft pdf भारत शिल्प।

*****